इकाई 26 पर्यावरण

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य
26.1 प्रस्तावना
26.2 परिभाषाएँ
26.3 ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि
26.4 अनिवार्यताएँ
26.5 विभिन्न देशों में हुए आन्दोलन
  26.5.1 सरवाक जनजातीय आन्दोलन
  26.5.2 ब्राज़ील में उष्ण कटिबंधीय वनों का सरंक्षण
  26.5.3 चीन में वृक्षारोपण का माओवादी आन्दोलन
  26.5.4 मैक्सिको में जनजातीय प्रतिरोध
  26.5.5 फिलीपीन्स में शाइको आन्दोलन
  26.5.6 दक्षिणी नाइजीरिया का प्रतिरोध आन्दोलन
  26.5.7 जर्मनी का ग्रीन आन्दोलन
  26.5.8 हरित शान्ति आन्दोलन
  26.5.9 पर्यावरण आन्दोलन में अन्य योगदान
26.6 भारत में हुए आन्दोलन
  26.6.1 चिपको आन्दोलन
  26.6.2 प्रशान्त घाटी बचाओ आन्दोलन
  26.6.3 ताज बचाओ अभियान
  26.6.4 मिट्टी बचाओ अभियान
  26.6.5 थाई बेशेट अभियान
  26.6.6 बेडथी अभियान
  26.6.7 भोपाल पतनम् - इंचमपाल बाँधों पर रोक
  26.6.8 दून-खनन
  26.6.9 कर्नाटक के निम्नीकृत वन
  26.6.10 काइगा अभियान
  26.6.11 गंध मर्दन बॉक्साइट - खनन
  26.6.12 नर्मदा बचाओ अभियान
  26.6.13 पश्चिमी घाट बचाओ पदयात्रा
  26.6.14 टिहरी बाँध अभियान
  26.6.15 रेयन कारखाने द्वारा प्रदूषण
  26.6.16 चिल्का बचाओं आन्दोलन
  26.6.17 विज्ञान एवं पर्यावरण संघ
  26.6.18 छत्तीसगढ़ आन्दोलन
  26.6.19 महाराष्ट्र, पालामऊ तथा सुखमोजोरी के जल संकरण आन्दोलन
  26.6.20 ऑरोविले आन्दोलन
  26.6.21 बिश्नोइयों की परंपरा
26.7 भारतीय परिदृश्य : एक परिप्रेक्ष्य
26.8 सारांश
26.9 शब्दावली
26.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
26.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

26.0 उद्देश्य

इस इकाई में यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि लोग, अपने पर्यावरण में होते हुए परिवर्तनों के प्रति अपनी अवक्रियाएँ, संगठित होकर अथवा अन्यथा, राजनीतिक दलों या निर्वाचित

प्रतिनिधियों के परंपरागत साधनों के बजाय असहमति, विरोध एवं प्रतिरोध के द्वारा भी अभिव्यक्त किया करते हैं।

इस इकाई में जिन विषयों को शामिल किया गया है वे इस प्रकार हैं - पारिस्थितिकी, पर्यावरण, संसाधन, विकास, समाज पर विकास के प्रभाव तथा इन चुनौतियों के प्रति लोगों की अनुक्रियाएँ। इस इकाई के अध्ययन करने के पश्चात्, आप समझ सकेंगे कि:

- पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण का निर्माण किस के द्वारा होता है;
- पर्यावरण संबंधी आन्दोलनों का अर्थ और उनकी प्रकृति;
- विभिन्न देशों में हुए पर्यावरण संबंधी कुछ आन्दोलनों के प्रकार; और
- भारत में पर्यावरण-आंदोलनों की प्रकृति और उनका महत्व।

26.1 प्रस्तावना

शताब्दियों से, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, आर्थिक संवृद्धि एवं सामाजिक विकास के माध्यम से मानव जाति के रहन-सहन की दशाओं में निरंतर सुधार होता रहा है। फिर भी रोम के क्लब ने, इस प्रगति को, निम्नलिखित पाँच प्रमुख कारणों के आधार पर, अत्यंत सीमित माना है:

- निर्बाध जनसंख्या वृद्धि
- अपर्याप्त ऊर्जा
- संसाधनों का अवक्षय
- स्वास्थ्य विज्ञान एवं स्वच्छता
- प्रदूषण

इसी निष्कर्ष का समर्थन 'विश्व **2000** प्रतिवेदन' (Report) में भी किया गया है। प्रदूषण विकास का एक परिणाम भी है और स्वस्थ मानव जीवन के लिए खतरा भी। प्रदूषण की रोकथाम के लिए ही पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन विकसित हुए हैं।

इसे समझने के लिए कि पर्यावरण-संरक्षण के लिए सामाजिक आन्दोलन क्यों होते हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरण, संसाधनों, उनके तंत्रों, विकास तथा परिणामों का ज्ञान अपेक्षित है। सर्वप्रथम कुछ परिभाषाओं को समझना आवश्यक है।

26.2 परिभाषाएँ

पारिस्थितिकी

पारिस्थितिकी का अर्थ है पृथ्वी नामक ग्रह के समस्त जातीय एवं स्थलीय अवयवों की पारस्परिक निर्भरता के आधार पर सहजीविता जिसमें सभी अवयव एक दूसरे का उपयोग करते हैं और समग्र संचय की पुनः पूर्ति भी करते रहते हैं। अतः मिट्टी, पानी, पौधे, जीव-जंतु, खनिज, वायुमंडल, ऊर्जा तथा मनुष्य आदि समस्त अवयव एक दूसरे का उपयोग करते हुए पारस्परिक संतुलन बनाए रखते हैं। पृथ्वी पर ये सब अलग-अलग क्रमचयों एवं संचयों में वितरित हैं। ऐसी प्रत्येक इकाई को उसके निदान सूचक एवं विभेदक लक्षणों के आधार पर, एक पारिस्थितिक तंत्र कहा जाता है।

पर्यावरण

मानव जाति अपने आप को (पारिस्थितिक तंत्र के) अन्य अवयवों से पृथक मानती है तथा उन्हें अपने संसाधन भर मान कर संतोष का अनुभव करती है। अतः मिजवाखपाऊजंमा (SWAMPEAH) मानव समाज का पर्यावरण कहलाता है।

संसाधन

मानव जाति के लिए, अपने आप के अतिरिक्त, जल, मिट्टी और भूमि, पौधे जंतु, रोगाणु, खनिज

तथा वायुमंडल समावेश रूप से एक संसाधन-आधार तैयार करते हैं। गुण एवं परिभाषा, दोनों की दृष्टि से इनके वितरण तथा उत्पादकता में विविधता होती है।

पारिस्थितिक तंत्र

पृथ्वी पर उपर्युक्त संसाधन 40 से अधिक पारिस्थितिक तंत्रों में वितरित हैं। प्रत्येक पारिस्थितिक तंत्र में उपर्युक्त संसाधनों के विभिन्न प्रकार पाए जाते हैं और विकास की यथावधि में उसके विशिष्ट लक्षण बन जाते हैं। ऐसे पारिस्थितिक तंत्रों में वन, मरुस्थल, तराई क्षेत्र, समुद्र, द्वीप, नदियाँ, चरागाह, भूमध्यरेखीय, उष्ण कटिबंधीय, उपोष्ण कटिबंधीय शीतोष्ण कटिबंधीय तथा अन्य भौगोलिक क्षेत्रों की हरित भूमियों आदि को गिनाया जा सकता है जो भिन्न भिन्न अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं से घिरे होते हैं।

विकास

मनुष्य अपने ज्ञान, अनुभव एवं विज्ञान और तकनीकी की प्रायोगिक दक्षता के आधार पर इन विविध पारिस्थितिक तंत्रों में विद्यमान संसाधनों का, अपने उपयोग के लिए निरंतर दोहन करता रहता है। इस प्रकार का उपयोग राजनीतिक सत्ता, प्रशासनिक तंत्र के माध्यम से लोगों के सामाजिक - आर्थिक हितों को ध्यान में रखकर कराती है। परिणामस्वरूप संसाधनों एवं विकास के उत्पादों के वितरण से इन सभी प्रक्रियाओं के ऐसे मूल उपादान का निर्माण होता है जिसमें समानता एवं न्याय सुनिश्चित हों। अतः उद्योग, व्यापार, वाणिज्य एवं व्यापार एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते हैं। इन प्रक्रियाओं से अनेक परिणाम सामने आए हैं।

परिणाम

यद्यपि विकास जन्म परिवर्तन सभी संबद्ध पक्षों के हितों के लिये होते हैं किन्तु देश और काल के अंतर से उन के परिणाम (क) पृथ्वी के अन्य अवयवों अर्थात् पारिस्थितिक तंत्रों तथा पारिस्थितिकी, (ख) अन्य पारिस्थितिक तंत्रों के अन्य लोगों, (ग) किसी पारिस्थितिक तंत्र के अपने ही लोगों तथा (घ) स्वयं पारिस्थितिक तंत्रों के लिये हानिकारक होने लगते हैं।

क) पहला परिणाम विद्यमान परिदृश्यों में परिवर्तन के रूप में प्राप्त होता हैं जिसके अंतर्गत संसाधनों का अवक्षय, तंत्रों का निम्नीकरण एवं पारिस्थितिक असंतुलन आदि शामिल हैं जिनमें संसाधनों का स्वामित्व या विकास हस्तान्तरित होते रहते हैं और अन्याय और असंतोष तथा आन्दोलन आदि का बीजारोपण होता है।

ख) दूसरा परिणाम आर्थिक होता है। इसके अंतर्गत आन्तरिक उत्पादन एवं वितरण में पुनरभिविन्यास, विदेशिक व्यापार में कमी, आतंरिक एवं बाहरी ऋण एवं निवेश, ऋण-भार तथा असहाय लोगों पर पड़ने वाली आर्थिक मार आदि शामिल हैं।

ग) तीसरा परिणाम सामाजिक होता है। असमानताएँ, आशाएँ और निराशाएँ, विभाजन, संघर्ष, घृणाओं और हिंसा इसमें शामिल होते हैं। परंपरागत संसाधनों एवं प्रचलनों के साथ-साथ परंपरागत मूल्यों का भी लोप हो जाता है और विश्व, समृद्ध राष्ट्रों एवं ग़रीब राष्ट्रों, अमीर लोगों एवं दीनहीनों जैसे वर्गों के बीच विद्यमान उभय प्रतिरोधियों के कारण तीन स्तरों में विभक्त हो जाता है। आशाएँ और निराशाएँ शक्ति एवं संपन्न लोगों की सनक के आधार पर बारी-बारी से उदित होती रहती हैं। भलमनसाहत तथा अन्य मानवीय मूल्य निरंतर विलुप्त होते रहते हैं और बहुसंख्यक लोगों के जीवन बेकार हो जाते हैं। पाण्डेकर की ग़रीबी रेखा का निहितार्थ यही है।

घ) चौथे प्रकार के परिणाम पर्यावरण एवं पारिस्थिक प्रक्रियाओं में पश्चगमन के रूप में होते हैं जिनके शमन की बात तो दूर रही, उन्हें समझना भी मुश्किल होता है। एक बार से घटित हो जाएँ तो इनका पलटना कठिन होता है। अम्लीय वर्षा या ओज़ोन परत का अवक्षय इसके उदाहरण हैं।

अनुक्रियाएँ

परिणामस्वरूप पारिस्थितिक सुरक्षा को चुनौती देने वाली आपत्तियों के विरुद्ध लोगों की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त होती हैं भूग्रह के अनेक भागों में ऐसा पहले होता रहा है और आज भी हो रहा है। ऐसी कुछ अनुक्रियाओं को आगे रेखांकित किया जा रहा है।

ये अनुक्रियाएँ ही चिंता, परामर्श और सावधानी की प्रथम अभिव्यक्तियाँ थीं। अपने विशिष्ट लक्षणों एवं परिमाण की दृष्टि से इन्हीं का क्रमशः स्थानीय, क्षेत्रीय एवं विश्वस्तरीय विरोधों एवं प्रतिरोधों के रूप में विकास हुआ। इन प्रतिरोधों ने न केवल क़ानूनी रूप एवं सामाजिक आन्दोलन का स्वरूप ही धारण किया वरन् उन्होंने परिवर्तन के लिए सामान्यतः स्वीकृत राजनीतिक तंत्र की सीमाओं का अतिक्रमण भी किया। ये मनुष्य के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा हेतु चलाए गए सामाजिक आन्दोलन या सामाजिक सहमति हेतु पर्यावरण आन्दोलन हैं।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) पारिस्थितिकी, पर्यावरण तथा पारिस्थितिक तंत्र से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विकास के परिणाम क्या हुए हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

26.3 ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि

हमारे ग्रह (पृथ्वी) की दशा नौ विश्वों के पैबंदों से बनी एक रज़ाई के समान है। ये पैबंद चार विश्व युद्धों द्वारा लगाए गए थे जबकि पाँचवा युद्ध अभी चल रहा है। वर्तमान विश्व में उच्च, मध्यम, एवं निम्न वर्ग के लोगों का अनुपात 2 : 3 : 5 है जो इतिहास के समस्त युद्धों की अंतिम परिणति है। इन युद्धों का सबसे बड़ा शिकार, संपूर्ण साधनों की जननी पृथ्वी हुई है जब कि सबसे बड़ी खलनायिका, समस्त समस्याओं की माता, उपभोक्तावादी संस्कृति रही है। इस सबका एकमात्र समाधान, पर्यावरण रक्षा संबंधी आन्दोलनों को निरंतर चलाते हुए पारिस्थितिकी को प्रकृतिस्थ रखना है।

इस तथ्य को अनेक लेखकों ने लिखा है जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं: **हक्सले वॉट, ऐर्लिच,**

कॉमनर, लियोपोल्ड, बॉल्डिंग, मीड, क्लब ऑव रोम, ग्रीन्स, गांधी, डब्ल्यू. डब्ल्यू. एफ. ऑडुबोर्न सोसायटी, सियरा क्लब, ज्योग्रेफ़िकल इंटरनेशनल आदि। इन सबसे पूर्व भारत के वैदिक, जैन और बौद्ध चिंतकों ने इस दिशा में कार्य किया था जिसे **डायसन थॉमस** एवं **ऐलन गिंसबर्ग** जैसे बीट कवियों, इस्कॉन तेथा इसी प्रकार के अन्य भारतीय दार्शनिकों, जैसे; **राधाकमल मुखर्जी, शिशिर कुमार दास, कृष्ण चैतन्य तथा गांधीवादियों** ने, जिनकी जड़ें पाश्चात्य भौतिकतावाद से जुड़ी हुई नहीं थी, इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं। इनमें सबसे रोचक नाम **चीफ़ बाल्टीमार** का है जिसने यूरोपियनों को अपनी ज़मीनों के अधिग्रहण के लिए चेतावनी दी थी और आज के पारिस्थितिक सक्रियतावादियों के लिए **इंद्रधनुषीय योद्धा** (रेन बो वारियर्ज़) पद का प्रयोग किया था। कालान्तर में इसी पद का प्रयोग हरित शान्ति आन्दोलन में अणुवीक्षक तथा गुप्तचर ध्वज पोत के लिए किया गया।

पर्यावरण रक्षक आन्दोलन न दक्षिणपंथी होते हैं और न वामपंथी। उनमें केवल आगा-पीछा होता है अर्थात् वे होते स्थानीय है किंतु उनके प्रभाव विश्वव्यापी होते हैं।

26.4 अनिवार्यताएँ

सम्पूर्ण विश्व के परोपकारवादी, स्वयंसेवी संगठनों के रूप में, सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक सुरक्षा एवं पुनर्लब्धि के हेतु अपनी प्रतिबद्धता के साथ प्रारंभ में सरकारी गतिविधि के अनुलग्नक, बाद में विकास के बेहतर अभिकर्ता के रूप में तथा आज नवोदित (किंतु कम शक्ति संपन्न) राजनीतिक बलों की भूमिकाओं में खुलकर मैदान में आ गए हैं। भारत के पर्यावरण-रक्षा-आन्दोलन यहाँ की जनतांत्रिक व्यवस्था की उपज़ हैं। वे तीन मोर्चों पर सक्रिय हैं: देशभर के स्वयंसेवी अभिकरणों तथा सामाजिक सक्रियतावादियों की भागीदारी में वृद्धि का प्रयत्न, देश के जन संचार माध्यमों तथा न्यायालयों तक उनकी पहुँच में वृद्धि। भारतीय पर्यावरण संगठनों ने वनों की कटाई, ऊँचे बाधों के निर्माण, अतिशय खनन, प्रदूषण तथा नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों के स्थापन का विभिन्न सफलता - स्तरों तक विरोध किया है।

26.5 विभिन्न देशों में हुए आन्दोलन

26.5.1 सरवाक जनजातीय आन्दोलन

सरवाक इंडोनेशिया के कालीमंटन (बोर्नियों) द्वीप में मलयेशिया का अंतर्वती क्षेत्र है। यहाँ मलेशिया सरकार ने जंगलों की अंधाधुंध कटाई शुरू करा दी। कटे हुए पेड़ों का निर्यात जापान को किया जाता था जहाँ से वे यूरोप के कुछ देशों को भेजे जाते थे। सरकारी आदेश के अनुसार लाभ का एक अंश मलयमूल के ठेकेदारों को जाता था। मुख्य भूमि के लोगों का सरवाक क्षेत्र में प्रवेश क़ानूनन वर्जित था। पूरी कार्रवाई पर गोपनीयता का पर्दा पड़ा हुआ था। सरवाक के मूल निवासी जो संसाधनों के अवक्षय तथा लाभांश से वंचित रखे जाने की दुहरी मान तो झेल ही रहे थे जब सेंसरशिप के द्वारा सूचना प्राप्त के अधिकार से भी दूर कर दिए गए तो उन्हें जले पर नमक छिड़कने जैसी पीड़ा का अनुभव हुआ और वे भड़क उठे। एक शिक्षित आदिवासी युवक **हैरसिन - गाओ** के नेतृत्व में इमारती लकड़ी की कटाई के विरुद्ध आन्दोलन हुआ और तब तक चलता रहा जब तक आदिवासियों को कुछ रियायतें न मिल गईं। संसाधनों एवं लाभांश संबंधी अन्याय एक बड़ी सीमा तक कम हुए, पूरे विश्व को इस राजसी अत्याचार विरोधी संघर्ष की जानकारी मिली जिसकी चरम परिणति गाओ को मिले नोबल पुरस्कार के रूप में हुई।

26.5.2 ब्राज़ील में उष्ण कटिबंधीय वनों का सरंक्षण

ब्राज़ील में भारी वर्षा वाले वन पशुपालकों, खनिज संभावनाओं रबर की खेती तथा इमारती लकड़ी की कटाई के कारण निरंतर खतरे में थे। कुछ भागों में रबर के वृक्षारोपण के कारण प्रिस्टाइन वन समाप्त कर दिए गए जिसके कारण स्थानीय आदिवासियों को रबर के बागों में सस्ती दर पर मज़दूरी करने के लिए बाध्य होना पड़ा। स्थानीय आदिवासियों को शाइको मोडेस के नेतृत्व में इस उत्पीड़न

का प्रतिरोध करना पड़ा। जब सरकारों और जन संचार माध्यमों में सजगता आ रही थी और थोड़ी सी न्यायिक समानता दिखाई पड़ने लगी थी तभी रबर माफ़िया के लोगों ने शाइको की हत्या कर दी। किन्तु आन्दोलन व्यर्थ नहीं गया।

26.5.3 चीन में वृक्षारोपण का माओवादी आन्दोलन

चीन की सांस्कृतिक क्रान्ति के दौर में माओ से तुंग ने पारिस्थितिकी तथा मानव जाति के लिए कल्याणकारी पर्यावरण निर्माण में वृक्षों की भूमिका के महत्व को अत्याधिक गंभीरता से समझा। परिणाम स्वरूप पूरे चीन में युवा क्रान्तिकारियों द्वारा **50 करोड़ वृक्ष** लगाए गए और शासनादेश द्वारा उस समय उनकी देखभाल की गई जब तक कि आवास में स्थायित्व का विकास नहीं हुआ।

26.5.4 मैक्सिको में जनजातीय प्रतिरोध

मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा में हुए उत्तरी अमरीकी मुक्त व्यापार समझौते की उत्तर कथा के रूप में मैक्सिको के दक्षिण पूर्वी एंज़टेंक क्षेत्र में खेती के ढ़ाँचे को बदलने का प्रयत्न किया गया। स्थानीय आदिवासियों ने अपने परपंरागत मोर्स के ढंग में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का सशस्त्र विद्रोह के रूप में प्रतिरोध किया। उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते पर भी सवाल उठाए गए जिसके फलस्वरूप सरकार को आदिवासियों के पक्ष में हस्तक्षेप करने को बाध्य होना पड़ा।

26.5.5 फिलीपीन्स में शाइको आन्दोलन

फिलीपीन्स के उत्तरी भाग में प्रवाहित शाइको नदी पर बाँध बनाने की योजना थी जिससे मैदानी भाग में सिंचाई और बिजली की व्यवस्था की जा सकती। उस निर्माण का विरोध किया गया क्योंकि अविकसित होते हुए भी दशकों से उस क्षेत्र की उपेक्षा की गई थी। अतः सरकार इस बात पर राज़ी हुई कि बाँध के निर्माण के साथ-साथ उस क्षेत्र का विकास भी प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। बाँध पर काम करने वाले मज़दूरों ने काम रोक दिया जिसके कारण सरकारी दमन चक्र को आमंत्रण मिला। प्रतिक्रिया स्वरूप स्थानीय लोगों ने विद्रोह किया। स्थानीय लोगों की धारणा यह थी कि सिंचाई तथा बिजली का लाभ दूसरों को मिलने जा रहा था। वे स्वयं इनका लाभ उठाना तो दूर इन्हें समझने में भी असमर्थ थे। प्रतिहिंसा ने धीरे-धीरे गुरिल्ला युद्ध का रूप ले लिया। मनीला सरकार स्थानीय लोगों के नैसर्गिक संसाधनों का अपहरण औरों के लिए करने के अपने प्रभाव के विरुद्ध उठे सशस्त्र विद्रोह को दबाने में असमर्थ रही।

26.5.6 दक्षिणी नाइजीरिया का प्रतिरोध आन्दोलन

दक्षिणी नाइजीरिया पूरे देश से भिन्न है। वहाँ प्राकृतिक संसाधन बहुत हैं, लोग शिक्षित एवं सुसंस्कृत हैं किन्तु क्रिश्चियन होने के कारण बहुसंख्यक होते हुए भी राजनीतिक रूप से प्रभावहीन हैं। स्थानीय लोगों में देश की बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी द्वारा संसाधनों के दोहन को लेकर असंतोष था। **केन सरोविवों** के नेतृत्व में मानवाधिकारों के लिए एक आन्दोलन प्रारंभ हुआ जो क्रमशः जोर पकड़ता गया। आन्दोलन में इस क्षेत्र से प्राप्त पैट्रोलियम के राजस्व में से भागीदारी की माँग की गई। तेल कंपनियों और सरकार में बैचेनी फैलने लगी क्योंकि आन्दोलन में जैसा प्रायः होता है, हिंसा का प्रवेश हो गया था। आन्दोलन के नेताओं को बंदी बना लिया गया और विश्व नेताओं के सभी विरोधों की कोई चिंता न करते हुए केन सरोविको को प्राणदंड दे दिया गया।

26.5.7 जर्मनी का ग्रीन आन्दोलन

संसार भर के पर्यावरण आन्दोलनों में जर्मनी का **'डाई गुनेन'** सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहा है। इस समूह का गठन 1970 के दशक में उस समय किया गया था जब अपनी अपनी निहित अपर्याप्तताओं में अनेक क्षेत्रीय समुदायों ने अनुभव किया कि पारिस्थितिकी संबंधी चेतना सभी के लिए समान रूप से चिंता का विषय था। अतः वामपंथी, नारीवादी, अराजकतावादी, मार्क्सवादी, मुक्तिवादी, हिप्पी,

नास्तिक, निरनुरूपतावादी और इसी प्रकार के अन्य समुदाय पारिस्थितिक बोध के एक मात्र उद्देश्य को लेकर एक साथ हुए। इस उद्देश्य के साथ मार्क्सवाद भी सहमत था और गांधीवाद भी। इससे विरोध का स्वर इतना मुखरित हुआ कि इन लोगों की गणना आतंकवादियों तथा अराजकतावादियों के साथ की जाने लगी और उन पर प्रतिबंध लगा दिया गया जिससे वे किसी भी सार्वजनिक पद को ग्रहण करने के अधिकारी नहीं रहे। परन्तु, जन साधारण में उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई। सरकार की आत्मघाती नीतियों में किसी प्रकार का परिवर्तन न होता देखकर उन्होंने चुनावों में भाग लिया और कुछ निगमों पर अधिकार कर लिया। फिर भी वे आंशिक रूप से ही सफल हो सके। इस भय से कि कहीं वे राजनीति की मुख्य धारा में शामिल न हो जाएँ, सरकार ने यह क़ानून बना दिया कि केवल उसी राजनीतिक दल के सदस्य संसद में बैठ सकेंगे जिसे कुल राष्ट्रीय मतों के कम से कम 5% मत मिले हों। उन्हें 7% से अधिक मत मिल गए और ग्रीन्ज संसद में प्रविष्ट हो गए। संसार के पारिस्थितिकी आन्दोलन में यह एक असाधारण सफलता का उदाहरण है।

ग्रीन आन्दोलन पूरे यूरोप में फैल गया। परंपरागत राजनीतिक दलों ने अपने घोषणापत्रों में पारिस्थितिक कार्यसूची को शामिल किया। अगले चुनावों में जर्मनी में ग्रीन्ज़ को सफलता नहीं मिली किंतु यूरापीय देशों में समाज पारिस्थितिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील हो चुका था। हाल ही के चुनावों में जर्मनी में ग्रीन्ज पुनः शक्तिशाली होकर उभरे हैं। वे अब अन्य दलों के साथ सत्ता में भागीदार हैं। अब संपूर्ण यूरोप में ऐसे संगठन हैं।

उन्होंने ग्रीन-घोषणापत्रों के माध्यम से पृथ्वी के प्रति चेतना जगाई है, एक निर्विरोध एवं सर्वमान्य कार्यसूची का विकास किया है, नागरिक पर्यावरणवाद एवं (पर्यावरण) निर्वाचकवाद को प्रस्तुत किया है। संक्षेप में पारिस्थितिकी का राजनीतिकीकरण हुआ है और राजनीति का पारिस्थितीकरण हुआ है। इस आन्दोलन के सबसे महत्वपूर्ण नेताओं में से एक **पेट्राकैली** हुए हैं।

26.5.8 हरित शान्ति आन्दोलन

यूरोप में प्रारंभ हुआ हरित शान्ति आन्दोलन अन्य आन्दोलनों की अपेक्षा अधिक यथार्थपरक है। इसमें व्यावहारिकता एवं प्रत्यक्षता अधिक है। इसके सदस्यों ने विविध उपायों से मानवीय पर्यावरण की रक्षा में बढ़-चढ़कर कार्य किया है। विविध स्तरीय सफलता के साथ उनके द्वारा चलाए गए कुछ प्रमुख आन्दोलन इस प्रकार हैं — जापान द्वारा ह्वेलों के शिकार के विरुद्ध आन्दोलन, फ्रांस कृत नाभिकीय परीक्षण का विरोध, ब्राज़ील के वर्षा-वनों में ताँबें के खनन का विरोध तथा सामान्य रूप से निरस्त्रीकरण का सर्वत्र समर्थन और विकिरण संकट का सदैव विरोध। अन्यत्र चलने वाले आन्दोलनों के लिए यह आन्दोलन एक आदर्श माना जा सकता है।

26.5.9 पर्यावरण आन्दोलन में अन्य योगदान

वर्ल्ड वाच इंस्टीट्यूट, वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट, फ्रैण्ड्ज़ आफ दी अर्थ तथा यूरोप और अमेरिका में चल रही इसी प्रकार की बहुत सी संस्थाएँ है जो या तो परिवर्तन प्रारंभ करने की दिशा में सहायता देने के लिए सूचना एकत्र करने का अभियान चला रही हैं या पर्यावरण आन्दोलन चला रही हैं। **रोज़ली बैट्रेल, वंदना शिवा, हैरिसन न्गाओ**, आदि लोग जिन्हें वैकल्पिक नोबल पुरस्कार कहे जाने वाले उपयुक्त **जीविका पुरस्कार** (*राइट लाइवलीहुड एवार्ड्स*) प्रदान किए गए हैं, सब के सब पर्यावरण-रक्षा-कार्य में जुटे हुए सक्रिय व्यक्ति थे।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) पर्यावरण आन्दोलनों का उदय क्यों और कैसे हुआ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) जर्मनी के ग्रीन्स का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

26.6 भारत में हुए आन्दोलन

26.6.1 चिपको आन्दोलन

सन् 1973 में, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा की जा रही वनों की नीलामी की नीति के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए दशोली ग्राम स्वराज्य मंडल नामक गांधीवादी संगठन ने चिपको आंदोलन प्रारंभ किया था। चिपको सक्रियतावादी वनों पर लोगों के अधिकार के समर्थक हैं और उन्होंने वृक्ष रोपण के लिए महिला-दलों का गठन किया है। 'चिपको' का अर्थ है 'पेड़ों को बाँहों में भर कर खड़े हो जाओ' जिससे उन्हें काटकर गिराया न जा सके। भारत में पर्यावरण आन्दोलनों में सबसे अधिक समर्थन प्राप्त आन्दोलन यही है। इसका प्रारंभ **सुंदरलाल बहुगणा** तथा **चंडी प्रसाद भट्ट** ने किया था।

इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप अनेक वन्य जीवन अभयारण्यों की स्थापना की गई हैं जिनमें शिकार करना संज्ञेय अपराध माना जाता है। वस्तुतः पशुओं एवं पक्षियों की लुप्त प्राय प्रजातियों को मारने पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून साठ के दशक के मध्य में ही पारित हुए थे। गिर का सिंह, बंगाल के चीते, भारतीय सारंग तथा ऐसे ही कुछ अन्य जीवों की प्रजातियों को इन कानूनों से सुरक्षा प्राप्त हुई है। कुछ प्रजातियों; जैसे, भारतीय चीता और कस्तूरी मृग के लिए ये कानून देर से बन सकें। किंतु पर्यावरणवादियों ने कुछ मूलभूत प्रश्न उठाए हैं। संपूर्ण पर्यावरण आन्दोलन का सारतत्व इन्हीं प्रश्नों में निहित है।

अनेक वर्षों के अनुभव के बाद इसी आन्दोलन ने **कर्नाटक** में एक और आन्दोलन **'आपिको'** को प्रेरित किया जिसमें पश्चिमी घाट के पेड़ों की कटाई रोकने के लिए उन्हें बाँहों में भरकर लोग खड़े हो जाते थे।

26.6.2 प्रशान्त घाटी बचाओ आन्दोलन

सन् 1980 के बाद प्रारंभ हुआ यह अभियान किसी बांध के विरुद्ध भारत में उठाया गया पहला क़दम था। इसी के द्वारा केरल में आनुवंशिक रूप से अत्यंत समृद्ध वर्षा-प्रचुर वनों में से अवशिष्ट अंतिम वन जलमग्न होने से बचाया जा सका है। इस अभियान को केरल-साहित्य-परिषद् ने प्रारंभ किया था जिसे भारत भर के विशेषज्ञों का समर्थन प्राप्त हुआ था।

26.6.3 ताज बचाओ अभियान

पर्यावरणविदों को डर था कि ताजमहल से 40 कि.मी. दूर मथुरा तेल शोधक कारखाने द्वारा फैलाए जाने वाले प्रदूषण से उस भव्य इमारत को क्षति पहुँच सकती थी। इस अभियान के कारण जो उत्तेजना फैली उसी का परिणाम है कि अधिकारियों को सावधानी बरतने और वायु प्रदूषण से होने वाली किसी भी क्षति के लिए उक्त स्मारक का समय समय पर अनुवीक्षण करने को बाध्य होना पड़ा।

26.6.4 मिट्टी बचाओ अभियान

मिट्टी बचाओ अभियान का प्रारंभ 1977 में हुआ था। यह अभियान मध्य प्रदेश में बनाए जा रहे तवा बाँध के विरुद्ध हुआ था जिसके कारण उपजाऊ मिट्टी में जलाक्रान्ति तथा लवणता में वृद्धि की आशंका थी। इस अभियान ने स्थानीय किसानों को एक जुट किया था और उन्होंने माँग की थी कि बाँध से प्रभावित भूमि के लिए उन्हें उपयुक्त क्षतिपूर्ति राशि दी जाए।

26.6.5 थाई बेशेट अभियान

मुंबई से 21 कि.मी. दूर थाई वेशेट में संसार के सबसे बड़े यूरिया उत्पादक संयंत्र की स्थापना का, मुबंई नगर के संगठनों, विशेषकर मुंबई - पर्यावरण कार्रवाई - समूह की ओर से ज़ोरदार विरोध किया गया। इन संगठनों को आशंका थी कि उक्त संयंत्र के कारण नगर के प्रदूषण स्तर एवं अकुशलता में वृद्धि होगी। उनके अथक प्रयत्नों के कारण संयंत्र के लगने में दो वर्ष की देरी तो अवश्य हुई किन्तु उसके स्थापन स्थल को परिवर्तित नहीं कराया जा सका।

26.6.6 बेडथी अभियान

भारत में पर्यावरणवादी विरोध के कारण प्रशान्त घाटी के बाद परिव्यक्त दूसरी जल विद्युत परियोजना बेडथी (कर्नाटक) थी। इस परियोजना से बहुत सा वन-प्रदेश तथा सुपारी इलायची एवं काली मिर्च के उद्यानों से सम्पन्न भूभाग जलमग्न हो सकता था। इस परियोजना का विरोध स्थानीय किसानों के साथ-साथ बंगलौर के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने भी किया था।

26.6.7 भोपालपतनम् - इंचमपाल बाँधों पर रोक

महाराष्ट्र में इंद्रावती नदी पर इन दो बाँधों को बनाने की योजना 'जंगल बचाओ मानव बचाओ' आन्दोलन के कारण रद्द करनी पड़ी थी। इस आन्दोलन में आदिवासी, पर्यावरणवादी, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा राजनीतिज्ञ, सभी शामिल थे।

26.6.8 दून-खनन

मसूरी पहाड़ियों की दून घाटी में चूने के पत्थर के खनन के कारण इन पहाड़ियों के वनों और स्थायी जल स्रोतों को नष्ट कर के वहाँ स्थायी घाव लगाए हैं। ग्रामीण बादकारी एवं अधिकार केन्द्र, देहरादून ने उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी और न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक निर्णय में खनन बंद करने का आदेश दिया जिससे पर्यावरण क्षय को रोका जा सकें।

26.6.9 कर्नाटक के निम्नीकृत वन

कर्नाटक सरकार ने लगभग 80,000 एकड़ निम्नीकृत वन भूमि एवं राजस्व भूमि, वन-रोपण के लिए एक संयुक्त क्षेत्र की कंपनी को देने का निर्णय लिया। पर्यावरणवादियों की ओर से इस निर्णय का विरोध किया गया। एक स्थानीय स्वयंसेवी अभिकरण, समाज परिवर्तन समुदाय ने उच्चतम

न्यायालय में इस तर्क के साथ याचिका प्रस्तुत की कि सरकारी वन्य भूमि के क्षेत्र में लोगों के प्रवेश का अधिकार उनके जीवित रहने के लिए अत्यंत आवश्यक था। अतः सरकार द्वारा व्यापारिक लाभ की दृष्टि से वृक्ष रोपण कराना लोगों के जीवित रहने के मौलिक अधिकार को प्रभावित करता था।

26.6.10 काइगा अभियान

काइगा (कर्नाटक) में नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र लगाए जाने का विरोध 1984 में प्रारंभ हुआ। सरकार, द्वारा इस परियोजना पर काम जारी रखने के निर्णय के बावजूद किसानों, सुपारी उत्पादकों, मछुआरों, पत्रकारों और लेखकों के समूह निरंतर यह चाहते है कि परियोजना बंद कर दी जाए। परियोजना, स्थानीय लोगों की आशंकाओं के बीच पर्याप्त संशोधनों के साथ चलती रही।

26.6.11 गंध मर्दन बॉक्साइट - खनन

उड़ीसा में गंधमर्दन वनों से बॉक्साइट के खनन का प्रस्ताव यद्यपि सरकार द्वारा औपचारिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है किन्तु स्थानीय आदिवासी नहीं चाहते कि उनके वनों को नष्ट किया जाए। अतः उनके तीव्र आन्दोलन के कारण वहाँ काम रूका पड़ा है।

26.6.12 नर्मदा बचाओ अभियान

नर्मदा नदी पर चलाई जा रही दो महाकाय परियोजनाओं के विरुद्ध होने वाले अभियान ने जनता का बहुत अधिक ध्यान आकर्षित किया है। इनमें से एक परियोजना मध्य प्रदेश में है और दूसरी गुजरात में। **हरसूद** (मध्यप्रदेश) में हुई एक प्रसिद्ध बैठक में देश के हरभाग से आए हज़ारों कार्यकर्त्ताओं ने इस अभियान के उद्देश्य के प्रति एकात्मता व्यक्त की है।

सरदार सरोवर तथा नर्मदा सागर परियोजनाओं की रूपरेखा गुज़रात में कच्छ प्रदेश तक पानी पहुँचाने के उद्देश्य से बनाई गई थी। इस परियोजना का संबंध चार राज्यों - मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात तथा राजस्थान से हैं जिनमें से गुजरात को सबसे अधिक लाभ पहुँचेगा। पर्यावरण की स्थिति से संबंद्ध प्रतिवेदन में आए विषयों पर अनिवार्य रूप से ध्यान दिए जाने की सिफ़ारिश की गई थी जो इस प्रकार थे - जल ग्रहण क्षेत्र, अभिक्रिया, क्षतिपूरक वन रोपण, उपयोग क्षेत्र का विकास, पुनर्वास, वनस्पति/प्राणिजात, पुरातत्व, भूंकपनीयता तथा स्वास्थ्य विषयक पक्ष।

इस प्रतिवेदन में कहा गया कि निर्माण कार्य और पर्यावरण एवं पुनर्वास संबंधी कार्य साथ-साथ चलने चाहिए थे किन्तु जहाँ निर्माण कार्य की प्रगति चार वर्ष आगे चल रही थी वहीं अन्य सभी विषय पिछड़ गए थे। सबसे बुरी हालत विस्थापित लोगों के पुनर्वास की थी। यहाँ पर यह प्रमुख मुद्दा था जिसको लेकर **सुश्री मेधा पाटकर** ने इस ऐतिहासिक आन्दोलन को प्रारंभ किया था। इसी बीच में बाँध की ऊँचाई बढ़ाने की चेष्टा की गई। हर प्रकार के चालाकी भरे प्रयासों का डटकर मुक़ाबला किया गया जब तक कि विश्व बैंक ने अपनी शर्तों में संशोधन न कर लिया और मध्यप्रदेश सरकार थोड़ी सी झुक न गई। आन्दोलन अब भी चल रहा है।

26.6.13 पश्चिमी घाट बचाओ पदयात्रा

पर्यावरणवादी अनेक गुटों ने 1988 में सम्मिलित रूप से महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडू तथा केरल राज्यों से होकर 1300 किलोमीटर से अधिक लंबी पदयात्रा का आयोजन किया था। इस पदयात्रा के द्वारा पश्चिमी घाटों की पर्यावरण संबंधी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया था।

26.6.14 टिहरी बाँध अभियान

भूकंपीय हिमालय क्षेत्र में टिहरी बाँध के निर्माण को अनेक पर्यावरणवादी समुदायों ने चुनौती दी है। स्थानीय संगठन टिहरी बाँध विरोधी समिति को आन्दोलन करते हुए 20 वर्ष से अधिक समय हो चुका है।

उद्योगों और विद्युत उत्पादन केन्द्रों का निर्माण इस विरोध का प्रमुख लक्ष्य रहा है क्योंकि उसके कारण प्रदूषण और पर्यावरण की क्षति की आशंका है।

हाल के वर्षों में नरौरा, काक्रपुर, काइगा, कुडंकुलम, नागार्जुन सागर में स्थापित नाभिकीय ऊर्जा संयत्रों तथा ऐसे ही संयंत्रों की केरल में स्थापना का विरोध किया गया है।

26.6.15 रेयन कारखाने द्वारा प्रदूषण

केरल में 'मयूर' का मामला इस बात का उदाहरण है कि कानून क्या कर सकता है। उस क्षेत्र में बाँसों की बहुतायत का काम उठाते हुए बिरला ने रेयन का कारखाना खोला। शीघ्र ही स्थानीय लोगों का जीवन स्तर पहले की अपेक्षा अच्छा हो गया। कारखाने का गंदा पानी नदी में डाला जाने लगा जिसके कारण नदी का पानी पीने के योग्य नहीं रहा। अतः उस कारखाने को बंद करने के लिए आन्दोलन किया गया और कारखाना बंद हो गया। वह कस्बा फिर पहले की तरह ही गरीबी से घिर गया। तब कारखाने को दुबारा खुलवाने के लिए आन्दोलन किया गया जो सफल हुआ किन्तु वायु एवं जल के प्रदूषण को रोकने के उपाय सुनिश्चित किए गए।

26.6.16 चिल्का बचाओं आन्दोलन

बंगाल की खाड़ी में उड़ीसा राज्य के पूर्वी तट पर खारे पानी की एशिया की सबसे बड़ी झील 'चिल्का' स्थित है जिसकी अधिकतम लंबाई 60 कि.मी. एवं अधिकतम चौड़ाई 30 कि.मी. है तथा मानसून के मौसम में जिसका क्षेत्रफल 1200 वर्ग किलोमीटर हो जाता है। सर्दी में यहाँ संसार के दूर दराज कोनों से लाखों प्रवासी पक्षी आते हैं अतः नालबन द्वीप सहित झील का खुला भाग एक अभयारण्य बन जाता है। समुद्र की ओर खुलने वाला झील का मुहाना डॉल्फिन मछलियों से भरा पड़ा है। इन्हीं सब कारणों से, चिल्का झील, प्रकृति प्रेमियों और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र चिरकाल से बनी हुई है किन्तु पिछले कुछ दशकों से स्थितियाँ अंधकारमय हो गई हैं जिनके कारण यह क्षेत्र संघर्षमय तथा हिंसापूर्ण हो उठा है।

यह सब उड़ीसा सरकार के साथ टाटा की एक परियोजना के कारण हुआ। यह 30 करोड़ की (वार्षिक) बिक्री वाली झील संवर्धन परियोजना थी। प्रत्युत्तर में राज्य के भूतपूर्व राजस्व मंत्री बॉकर बिहारी दास ने चिल्का बचाओ आन्दोलन छेड़ दिया। आन्दोलन में निम्नलिखित तर्क दिए गए कि इस परियोजना सेः

क) झील में स्थानीय मछुआरों के प्रवेश पर रोक लग जाएगी।

ख) स्थानीय पशुओं से विशाल चरागाह छिन जाएगा।

ग) समय समय पर जैवपोषकों तथा किण्वित भोज्य के डाले जाने से झील प्रदूषित हो जाएगी जिससे समुद्री जीवन का क्षय होगा और खारेपन के स्रोत के कारण पहले से ही कम होते हुए मत्स्य झील में और भी गिरावट आ जाएगी।

घ) प्रवासी पक्षियों का आना कम हो जाएगा क्योंकि पानी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए उच्च शक्ति के डीज़ल पम्पों का प्रयोग करना पड़ेगा।

भारत, रामसर अन्तर्राष्ट्रीय संधि के हस्ताक्षरकर्त्ताओं में है जिसमें आर्द्र भूमि संरक्षण पर विचार करते हुए चिल्का को उसके अनुपम पारिस्थितिक तंत्र के कारण संसार के जलाशयों में अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया था। अतः अक्तूबर 1992 में केन्द्र सरकार ने टाटा परियोजना को अनुमति न देने का निर्णय लिया। नवंबर 1993 में चिल्का झील के पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा के समर्थन में उड़ीसा उच्च न्यायालय की खंडपीठ का एक निर्णय भी आ गया।

इसी बीच आर्थिक दबाबों के कारण अनायास ही अनेक ऐसे लोग भी झील में मछली पकड़ने लगे जो मछुआरे नहीं थे। चिल्का बचाओ आन्दोलन ने स्थानीय ग्राम वासियों की सहायता से नई स्फूर्ति

के साथ मछुआरों के हितों के लिए ज़ोरदार संघर्ष किया। इस आन्दोलन को पर्यावरणवादियों की ओर से आमतौर पर समर्थन प्राप्त हुआ है।

फिर भी पारिस्थितिकी तथा कल्याण कार्य की अपेक्षा व्यापार और लाभ कहीं अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुए। बाहरी लोगों ने स्थानीय ग़ैर मछुआरों से झील पर अतिक्रमण कराया तथा झील और समुद्र के मिलन स्थल पर झींगा फार्मों द्वारा प्रयुक्त अवरोधों ने स्थानीय मछली की पकड़ को बहुत कम कर दिया जिसके कारण आन्दोलन हुआ और पुलिस द्वारा गोली चलाई गई। आन्दोलन अभी चल रहा है और आज की माँग यह है कि झींगा पालन पर पूरी तरह रोक लगाई जाए।

26.6.17 विज्ञान एवं पर्यावरण संघ

यह केन्द्र गत दो दशकों से अनिल अग्रवाल के नेतृत्व में पर्यावरण के पक्ष में महत्वपूर्ण सेवा कर रहा है। यद्यपि इस केन्द्र ने प्रत्यक्ष रूप से कोई आन्दोलन नहीं चलाया किन्तु उन्होंने अपने उद्देश्यों को भली भाँति समझाया है; सूचना, समर्थन तथा पृष्ठभूमि - सामग्री जुटाई है; नीति-परिवर्तन संबंधी परामर्श दिए हैं; राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों से लेकर जनसाधारण तक नीतिगत दृष्टिकोण तथा मनोवृत्ति में परिवर्तन के लिए अत्यन्त सकारात्मक रूप से लॉबियाँ तैयार की हैं। विज्ञान एवं पर्यावरण संघ तथा उसके यथार्थवादी सामयिक प्रतिवेदनों के बिना भारत में हुए अनेक आन्दोलनों के विषय में संबद्ध नागरिकों को सूचना भी प्राप्त नहीं हो सकती थी।

26.6.18 छत्तीसगढ़ आन्दोलन

शंकर गुहानियोगी ने छत्तीसगढ़ आदिवासियों को हर प्रकार के शोषण के विरुद्ध संगठित किया था। ऐसे शोषणों में वन्य उत्पादों से होने वाला लाभ प्रमुख था। हालॉकि उन्होंने पर्यावरण के मुद्दे को श्रमिक संघ तथा प्रतिनिधिपरक राजनीति से जोड़ लिया किन्तु उनका विशेष बल सदैव स्थानीय लोगों एवं आदिवासियों के लिए परिस्थितिक तंत्र को सुरक्षित रखने पर ही रहा। उनकी सफलताओं को न सह सकने वाले अत्याचारी तत्वों द्वारा की गई उनकी हत्या हैरानी की बात नहीं थी।

26.6.19 महाराष्ट्र, पालामऊ तथा सुखमोजोरी के जल संकरण आन्दोलन

ये छोटे-छोटे आन्दोलन किसी अत्याचार के विरोध में जाग्रत नहीं हुए थे। इनका लक्ष्य यह है कि संसाधनों में सबसे अधिक पवित्र, 'जल' का वितरण ज़रूरतमंद लोगों में न्यायोचित ढंग से हो सके। महाराष्ट्र के कुछ भागों में पानी-पंचायतें बहुत सफल रही हैं। पानी को उपयोग में लाने के आधार पर सुखमोजोरी नामक पूरे गाँव के पुनरुद्भवन तथा इसी प्रयोग को पालामऊ में पुनरावृत्ति को आदर्श के रूप में माना गया है। कुछ न कुछ कमियाँ एक अलग बात है।

26.6.20 ऑरोविले आन्दोलन

ऑरोविले, श्री अरविंद के दर्शन तथा पारिस्थितिक संरक्षण एवं सुरक्षा के आधार पर परस्पर संबद्ध विभिन्न राष्ट्रों के लोगों की बस्ती है। यह बस्ती गत 30 वर्षों से कार्यरत है। अपने ही उदाहरण से इन लोगों में बेहतर पर्यावरण संबंधी चिंताओं और प्रयत्नों को पुनर्जीवित कर दिया है। उनकी गतिविधियों में से कुछ अपह्रासी मृदा (खेती के लिए खराब हो चुकी मिट्टी) के पुनः स्थापन, सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा के उत्पादन, बचे पदार्थों का बेहतर कृषि उत्पादन के लिए पुनः चक्रण, रासायनिक उर्वरकों के विकल्पों की खोज, सामाजिक वानिकी, जैव कृषि, टंकी का पुनर्योजन, जल-संभरण प्रबंधन तथा पारिस्थितिक दृष्टि से उपयुक्त आवास आदि, हैं। वस्तुतः ऑरोविले आन्दोलन, शेष भारत के असंख्य लोगों में ऐसे ही आन्दोलनों को जन्म देने की क्षमता रखता है।

26.6.21 बिश्नोइयों की परंपरा

चिपको आन्दोलन ने अपने वृक्षों और वन्य जीवन की रक्षा की प्रेरणा राजस्थान के बिश्नोइयों से ली थी जिनकी महिलाओं ने बहुत पहले वन्य-जीवन-संरक्षण के उद्देश्य से अपने प्राणों की आहुति दी

थी। आज फिर वह वन्य जीवन की रक्षा के लिए प्रयत्नशील है। हाल ही में बिश्नोइयों की ही पहल पर उनकी परंपराओं के उल्लंघन के लिए मुंबई के कुछ फ़िल्मी सितारे बंदी बनाए गए थे। भारत के पर्यावरण आन्दोलनों में यह परंपरा बहुत पुराने समय से अब तक चली आ रही है।

बोध प्रश्न 3

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) चिपको आन्दोलन की प्रकृति और उसके महत्व का विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) नर्मदा बचाओ आन्दोलन से जुड़े हुए मुद्दे क्या क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

3) पर्यावरण-निम्नीकरण से जुड़े हुए मुद्दे क्या क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

26.7 भारतीय परिदृश्य : एक परिप्रेक्ष्य

सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए (भारत में) जल, मृदा, भूमि, पौधों, पशुओं, वायु, ऊर्जा, वन आदि संसाधनों की अपर्याप्तता है। सबकी साझा संपत्तियों पर व्यक्तिगत अधिकार कर लिए जाते हैं। विकास परियोजनाएँ न्यायपूर्ण ढंग से विस्तृत नहीं की जाती हैं। उनके उप-उत्पादों तथा संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से साझी विरासत, पारिस्थितिक तंत्रों; का बहुत ह्रास हुआ है। परिणामस्वरूप अधिक से अधिक लोगों के लिए निर्वाह, मुश्किल होता जा रहा है और वे ग़रीबी रेखा से नीचे पहुँचते जा रहे हैं। शीघ्र ही भारत की आधी जनसंख्या इस वर्ग में आ जाएगी।

सिंचाई या उद्योग से संबंधित बड़ी परियोजनाओं से बहुत थोड़े समय के लिए राहत प्राप्त होती है। समय के साथ हर परियोजना उस क्षेत्र की पारिस्थितिकी को इतना अस्त व्यस्त कर देती है कि स्वच्छ जल, शुद्ध वायु, स्वस्थ आहार तथा जैव संसाधन सहज लभ्य नहीं रह जाते। सभी असमानताओं के स्वाभाविक परिणाम संघर्ष, हिंसा या बोस्निया जैसे हालात के रूप में फूट पड़ते हैं क्योंकि अन्याय को सभी लोग अनंतकाल तक स्वीकार नहीं कर पाते। विकास संलक्षण का

विस्तारवाद भविष्य में हमारे संसाधनों, पारिस्थितिकी और पर्यावरण का, और भी विनाश कर डालेगा। मानव जाति की प्रगति के लिए जितनी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है उसे भुगतना अकल्पनीय हो जाएगा।

प्रगति एवं विकास के लिए सरकार जिम्मेदार है। उसके पास पर्यावरण रक्षा के सभी साधन, ज्ञान के सभी अंतर्वेश, निर्णयात्मक क्षमता, वित्तीय साधन, नौकरशाही, दलीय कार्यकर्ता, बाहरी निवेश तथा विशेषज्ञों की सलाहें आदि, सभी कुछ उपलब्ध है। फिर भी स्वयंसेवी संस्थाओं को पसंद किया जाता है, उनका समर्थन किया जाता है, उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है और उन पर निर्भर रहा जाता है। क्या शासनतंत्र सर्वथा निकम्मा हो गया है?

कोई स्वैच्छिक कार्य कब तक अपने आपको संभाले रह सकता है? ग़ैर सरकारी संगठनों के किसी परिसंघ का बनाया जाना अनिवार्य है जिससे मनःपोषित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लॉबिंग करने की शक्ति में वृद्धि हो सके। यदि राजनीतिक बलों, दलों और क्रियाविधियों का पर्यावरणीकरण नहीं हो पाता तो पर्यावरण सक्रियतावादियों को स्वयं राजनीतिक बलों के रूप में ढलना पड़ेगा। अन्यथा पारिस्थितिक अराजकता कालान्तर में सामाजिक एवं राजनैतिक अराजकताओं के बीज बो देती है।

इस बीच में न्यायिक सक्रियता एक स्वागत योग्य परिवर्तन आया है। जनहित याचिका तथा ग्रीन बैंचों के कारण पर्यावरण पर विशेषकर प्रदूषणकारी उद्योगों द्वारा होने वाले हमलों का निवारण सुनिश्चित हुआ है और पर्यावरण संरक्षण आन्दोलनों को जीवित रहने के लिए आवश्यक प्राणवायु प्राप्त हुई है।

26.8 सारांश

पृथ्वी और उसके अवयव मानव जाति को विरासत में मिले संसाधन हैं। मानव समाज के कुछ गिने चुने वर्गों ने इन पर जो स्वामित्व जमा रखा है उसके भयंकर निषेधात्मक परिणाम दूसरों को झेलने पड़ते हैं। जब इन परिहार्य समस्याओं को रोक पाने में सरकारें असमर्थ हो जाती हैं तो उनके लाइलाज होने से पूर्व बचाव के किसी न किसी उपाय की पहल बुद्धिजीवियों, संबद्ध नागरिकों तथा प्रभावित स्थानीय लोगों द्वारा की जाती है। कल्याणकारी सरकार के उत्तरदायित्वों के विस्थापन के लिए गांधीवादियों, मार्क्सवादियों, वैज्ञानिकों, संरक्षणवादियों तथा उत्पीड़ितों के सम्मिलित प्रयास से राजनीतिक सिद्धान्त का एक नया आयाम उभरने लगता है।

ये आन्दोलन चाहे राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिरोधों के रूप में हों, शैक्षिक एवं जागरूकता अभियानों के रूप में हों या सार्वजनिक राय निर्माण के उद्देश्य से किए गए हों, यह निश्चित है कि ये सब दीर्घकाल के लिए सभी के हित में बेहतर पर्यावरण संबंधी नीति-परिवर्तन कारक सिद्ध होते हैं।

संसार में पर्यावरण क्षय या उसके प्रति उदासीनता के विरुद्ध अगणित विद्रोह हुए होंगे किंतु न तो उनके उल्लेख मिलते हैं न उनके संबंध में की गई घोषणाएँ उपलब्ध हैं। सन्तोष में बात यह है कि आज संसार भर में इसके प्रति जागृति आ रही है तथा आन्दोलन विकसित हो रहे हैं।

26.9 शब्दावली

गुरिल्ला युद्ध : छोटे-छोटे दलों द्वारा की गई लड़ाइयाँ जिनमें किसी नियमित सेना ने भाग न लिया हो।

मुक्ति-धर्मी : मूलतः धर्म में विश्वास रखने वाले विद्वान जो सामाजिक न्याय की चिंता रखते थे और उसके लिए कार्य भी करते थे। दूसरे शब्दों में सामाजिक न्याय की चिंता में आनन्दानुभूति करने वाले लोग।

नारीवादी : स्त्रियों के अधिकारों के प्रति चिंतित एवं उनके समर्थन में आन्दोलन करने वाले लोग।

अराजकतावादी : ऐसे लोग जिनका विश्वास था कि सरकारें तथा कानून अवांछनीय हैं अतः उन्हें समाप्त किया जाना चाहिए।

26.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

डाऊन टू अर्थ, इकालोजिस्ट, पब्लिकेशनस ऑफ सी.एस.ई. अर्थ स्केन एण्ड वर्ल्ड वॉच इन्स्टीट्यूट।

टी.वी. के 'डिस्कवरी' तथा 'नेशनल ज्यॉग्राफ़िक' चैनल।

26.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) **पारिस्थितिकी** - पृथ्वी नामक ग्रह के सभी अवयवों की पारस्परिक निर्भरता एवं पुनः पूर्ति की निरंतर चलने वाली चक्रीय व्यवस्था।

2) **पर्यावरण** - मानव जाति द्वारा पारिस्थितिकी के अन्य अवयवों को केवल अपने लाभ की दृष्टि से उपयोग में लाना।

3) **पारिस्थितिक तंत्र** - पर्यावरण संसाधनों का विभिन्न तंत्रों; जैसे, वन-प्रदेश, मरुभूमि और आर्द्र भूमि आदि में वितरण।

बोध प्रश्न 2 .

1) देखें भाग 26.4.।

2) देखें उपभाग 26.5.7।

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 26.6.1।

2) देखें उपभाग 26.6.12।

3) देखें भाग 26.7।